

गुरू तो पूरा ढूँढ रे तेरे भले की कहूं।

मेरा दूसरा निवेदन यह है कि अपनी शारीरिक आवश्यकताओं के लिए आप गुरू महात्माओं को खुद अपनी रोजी—रोटी की व्यवस्था करनी चाहिए। यदि आप सत्संगियों का भेट चढावा खाते हैं तो आपका मन पवित्र नहीं रहेगा जैसे कहा जाता है कि— जैसा अन्न वैसा मन। मेरे प्यारे सज्जनों। यह मन की अति पवित्रता का मार्ग है। आपका मन वचन व कर्म से पवित्र होना अत्यन्त अनिवार्य है और योगसाधना में आपका अनुभव मन के मण्डल यानी विचररीरों से ऊपर का होना चाहिए। यह मन से ऊपर शब्द का साधन हि नाम निज नाम सतनाम, अनहद, नाद, उदगीत, प्रणव इत्यादि कहलाता है। महात्माओं के लिए हर समय योग में रहना जरूरी है ताकि जो भी उनका दर्शन करे उसको सुख—शान्ति मिले। यदि यह अनुभव आपका नहीं बना है तो आप अपने आपको और अपने विश्वासियों को धोखा दे रहे हैं और इसका फल से आप बच नहीं सकते और इसका अन्त दुखदायी होगा।

योग साधन व अध्यात्म के हमारे पिछले महात्माओं ने चार स्तर बताए हैं। जैसे:—  
उत्तमा सहजावस्था मध्यमा ध्यान धारणा।  
अधमा तीर्थयात्रा मूर्ति पूजा च धमाधमा।

प्यारे महात्मा सज्जनों। मुझे गुरू कृपा से पहले ही दिन परंम सन्त पं० फकीरचन्द जीकी अपार कृपा से सहजावस्था का अनुभव हो गया था। इसमें कुछ करना नहीं पडता। जैसे कबीर ने कहा है—

सहजे ह धुन होत है हर दम घट क माहि।  
सुरत शब्द मेला भया मुंह की हाजत नाहि।

परन्तु सब मनुष्यों का एक ही साधन नहीं हो सकता लेकिन जो भी हम मन वचन व कर्म की पवित्रता से करेंगे तो हमारा काम बन जायेगा।